विद्युत दर्पण

पक्षेविसमिति की गृह पत्रिका

अंक-11 जनवरी-मार्च 2009

सम्पादकीय

ग्रीष्म ऋतु के आगमन के साथ ही चाहे अनचाहे गर्मी का भी आगमन होता है । लेकिन गर्मी से परेशान मानव के मानो राहत देने के लिए प्रकृति अपने रंगों का करिश्मा दिखाती है । कहीं केसरी फूलों की चुनरी ओढ़े दुल्हन-सा खिला गुलमोहर तो कहीं बसंती रंग में रंगा सोनमोहर, ऐसे कई रंग-बिरंगें मनमोहक फूल ग्रीष्म की दाहकता को कम करते हैं ।

मानव ने जब से प्रकृति के कार्य-क्षेत्र पर अपना अधिकार जमाया है और पर्यावरण को हानि पहुँचायी है, तब से प्रकृति ने भी प्रकोप ढाना आरंभ किया है । ग्रीष्म ऋतु की असहनीय गर्मी इसी का उदाहरण है । प्रकृति ने पेड़ों की छांव दी लेकिन मानव ने अपने स्वार्थ के लिए पेड़ तोड़े । मानव प्राकृतिक ठंडक का नाश करके कृत्रिम ठंडक के पीछे दौड़ने लगा । पंखे, कूलर, एसी न जाने कितने साधन जुटाये, गर्मी से लड़ने के लिए । लेकिन इसके चलते बिजली की खपत और मांग बढ़ती चली गयी । एक ओर सीमित प्राकृतिक साधन और दूसरी ओर असीमित मांग । पर्यावरण का समतोल रहे तो कैसे ?

हम हमेशा यह सोचते हैं कि बदलाव आये लेकिन, मैं ही क्यों लाऊं ? तो हमें यह सोचना चाहिए की मैं ही क्यों नहीं ? जरा इस तरह सोच के देखें कि मैं जरूरत हो उतनी ही बिजली इस्तेमाल करूंगा, बिजली की बचत करूंगा । पेड़ काटूँगा नहीं बल्कि पौधे लगाऊँगा । प्लास्टिक की थैलियों का इस्तेमाल नहीं करूंगा । अपना परिसर स्वच्छ रखूंगा । ध्वनि प्रदूषण रोकने के प्रयास करूँगा । पानी का अपव्यय नहीं करूँगा । सार्वजनिक सम्पत्ति को हानि नहीं पहुंचाऊंगा---- ।कितनी छोटी-सी बाते हैं ये लेकिन असर बहुत बड़ा होगा। फिर हम किसी ओर का इंतजार क्यों करें ? चलो, ''मैं'' से ही अच्छे कार्य की शुरूआत करते है ।

(प्रवीणभाई पटेल)
सदस्य सचिव

*****

इदमन्धन्तम: कृतस्नं जायेत भुवनत्रयम् ।
यदि शब्दाह्वयं ज्योतिरासंसारं न दीप्यते ।।
-दण्डिन्

राजभाषा समाचार

वर्ष 2009-10 के लिए कार्यालय में निम्नलिखित प्रोत्साहन योजनाएँ लागू की गई हैं:-

1. हिन्दी में मूल टिप्पण आलेखन (राजभाषा विभाग के मार्ग - निर्देश अनुसार) प्रोत्साहन योजना
2. हिन्दी में मूल टिप्पण आलेखन लघु प्रोत्साहन योजना
3. हिन्दी में डिक्टेशन देना प्रोत्साहन योजना
4. कम्प्यूटर पर हिन्दी कार्य प्रोत्साहन योजना
5. तकनीकी लेख प्रोत्साहन योजना

उपरोक्त प्रोत्साहन योजनाओं की अवधि 1अप्रैल 2009 से 31 मार्च 2010 तक होगी ।

*****

अमृत वचन

शैले शैले न माणिक्यं
मौक्तिकं न गजे गजे ।
साधवो नहि सर्वत्र
चन्दनं न वने वने ।

प्रत्येक पर्वत पर माणिक्य नहीं होता और न सभी हाथियों के सिर पर मुक्ता होती है और न ही सभी स्थान पर साधु मिलते हैं और न तो सभी वनों में चंदन पैदा होता है ।

विशेष

माणिक्य, मोती, साधु पुरूष और चंदन सभी कहीं-कहीं और बड़ी खोजबीन के बाद उपलब्ध होते हैं, उसी प्रकार अच्छाई भी सब जगह नहीं होती । उसको पाने के लिए स्थान-स्थान पर भटकना होता है । कुछ ही लोग अच्छे होते हैं पर सागर में छिपे मोती की तरह उन्हें संसार सागर में गहरे पैठ कर ही ढूंढा जा सकता है । इससे यह भी ज्ञात होता है कि किसी चीज़ को पाने के लिए प्रयत्न करना बहुत जरूरी होता है ।

*****

तीनों लोक अंधकार में ही डूबे रहते
यदि शब्दों के दीप से भाषा का
प्रकाश संसार में न फैलता ।

गृह निर्माण : क्या करें क्या न करें

सुकुमार हानरा
सहायक अभियंता

घर बनाते समय ध्यान देने योग्य बातें

जब भी आप अपना घर बनाएँ, अच्छे निर्माण हेतु अपने दिमाग में कुछ टिप्स तथा रूपरेखा रखें । यह सुनिश्चित करें कि प्रत्येक स्तर पर निर्माण का कार्य उच्च कोटी का हो । निर्माण के समय जानने के योग्य कुछ बातें नीचे दी गई हैं:

निर्माण से पूर्व

1. रजिस्ट्रार कार्यालय से भूमि / प्लाट खरीदने से पहले एक प्रमाण पत्र प्राप्त करें ताकि कोई कानूनी बाधा न आये ।
2. ठेकेदार / बिल्डर्स / सप्लायर से अनुबंध करते समय नियम तथा शर्तों का ठीक से ध्यान रखें ।
3. कुल कंस्ट्रक्शन शिड्यूल को कम करने के लिए समांतर गतिविधियों का नियोजन करें ।
4. क्रॉस व्हेंटिलेशन को सुनिश्चित करें एवं पर्याप्त खुली जगह हवा के लिए रखी जाए ।

निर्माण लागत का प्राकलन

1. आपको अनुमानित खर्च का पूर्वानुमान होना चाहिए । अपने संसाधनों को स्टेजवाईज़ खर्च के लिए सुनियोजित करें ।
2. वर्तमान एवं भविष्य की आवश्यकताओं को ध्यान में रखें ।

निर्माण सामग्री

1. ब्लेंडेड / कम्पोजिट सीमेंट का निर्माण के दीर्घकालीन मजबूती तथा ड्यूरीबिलीटी के लिए प्रयोग करें ।
2. निर्माण के समय सीमेंट बेग जो पहले आयी है, उसका पहले प्रयोग करें ।
3. निर्माण एवं क्यूरिंग में प्रयोग होने वाला पानी साफ तथा नुकसानदायक नमक से मुक्त होना चाहिए ।

उच्च निर्माण पद्धति

1. आर.सी.सी. के निर्माण के समय उचित कव्हर ब्लाक्स का उपयोग करें ।
2. उचित लेप लेंथ और स्टील रेनफोर्समेंट होनी चाहिए ।
3. कांक्रीट / मटार मिक्स बनाते समय सीमेंट, बालू,पानी का बेचिंग / मिक्सिंग उचित होना चाहिए ।
4. कंक्रीट /मटार मिक्स पानी मिलाने के एक घंटे के भीतर प्रयोग कर लें ।
5. हाथ से मिक्सिंग करते समय यह ध्यान रखें कि सीमेंट और बालू ठीक से मिक्स हों । इसके बाद खडी के टुकड़े मिलाएँ और अंत में पानी मिलायें । कमपैकिंग के लिए वाईवेटर का इस्तेमाल करें।
6. तत्पश्चात निर्माण कार्य की सतह पर किउरिंग / मॉस्चरिंग प्रारम्भ करें । फिर उसे 10 से 14 दिन तक निर्माण की सतह को निरंतर गीला रखें ।
7. ब्रिक वर्क करने से पहले ईंटों को पानी में भिंगों ले ।
8. प्लास्टरिंग करने से पहले ईंटों की दीवार की सतहों को गीला कर लें ।
9. कांक्रीट तथा ब्रीक वर्क के बीच की जगह को चिकेन वायर मैश लगाकर प्लास्टरिंग करना चाहिए ।
10. फिनिशिंग के समय स्टील फ्लोट के बदले लकड़ियों के फ्लोट का उपयोग करें ।

घर की सुरक्षा एवं सुंदरता

1. सतह पैंटिंग करने से पहले क्रैक्स,लूज़ प्लास्टर आदि मरम्मत कर लें ।
2. किचन / वॉश बेसिन और बाथरूम के लिए अलग वाटर टैंक रखें । डब्ल्यू सी तथा गार्डिनिंग के लिए अलग वॉटर टैंक रखना उचित है ।
3. घर के अंदर ठंडक बढ़ाने के लिए छत के ऊपरी भाग थर्मल इंस्यूलेशन का प्रयोग करें ।
4. इंस्पेक्शन चेंबर / मेन होल में मुक्त प्रवाह होना चाहिए ।
5. आईएसआई प्रमाणित सामग्री ही खरीदनी चाहिए ।
6. अपने भूमिगत जल स्तर को रेन वाटर हॉर्वेस्टिंग के द्वारा उचित स्तर पर रखें ।

यह न करें

1. शटरिंग ज्वाइंट में खाली जगह नहीं होना चाहिए ।
2. फास्ट सेटिंग प्रापर्टी के बेस पर सीमेंट का सिलेक्शन न करें । बल्कि सीमेंट का सिलेक्शन लॉग टर्म की स्ट्रैंगथ तथा निर्माण के अधिक ड्यूरेबल होने के लिए सिलेक्ट करें ।
3. बिल्डिंग निर्माण संबंधित ऐसी वस्तुओं का संग्रह न करें जो कि तुरंत इस्तेमाल होने वाले न हों ।
4. कांक्रीट / स्लैब का शटर तुरंत न निकालें । स्लैब को शैटल होने के लिए पर्याप्त समय दें ।
5. निर्माण कार्य तथा क्यूरिंग के लिए समुद्र का नमकीन पानी इस्तेमाल न करें ।
6. किसी भी क्रॉस सेक्शन एरिया में स्टील वर्क 50% से ज्यादा न होने दें ।
7. मिट्टी अथवा नमक युक्त बालू का इस्तेमाल न करें ।
8. कांक्रीट मिक्स को अधिक लूज़ / हार्ड न करें । उतना ही पानी मिलायें जितना आवश्यक हो । अधिक पानी नुकसान दायक है ।
9. मिक्स में पानी बार-बार न मिलायें । उचित पानी एक बार मिलाकर मिक्स का प्रयोग जल्दी से जल्दी कर लें ।
10. निर्माण कार्य में कांक्रीट मिक्स को 1.5 मीटर से अधिक ऊंचाई से न गिरायें ।
11. इंटों के बीच के गारे की मोटाई 1 से.मी. से ज्यादा नहीं होनी चाहिए ।

ध्यान देने योग्य बातें

1. निर्माण कार्य के बाद सुरक्षा, पानी एवं साधारण मरम्मत इन बातों का बाद में ध्यान रखें ।
2. प्रत्येक 5 साल में किसी सिविल इंजीनियर अथवा अनुरक्षण विशेषज्ञ के द्वारा इमारत का निरीक्षण आवश्यक है ।
3. ओरिजनल पैंटिंग को कलर रहित होने का इंतजार न करें, पैंटिंग मात्र सुंदरता के लिए ही नहीं, बल्कि सुरक्षा की दृष्टि से भी आवश्यक है ।

उपरोक्त बातों को ध्यान में रखकर गृह निर्माण कर लें तो वह घर क्यों न स्वर्ग से सुंदर होगा ।

****